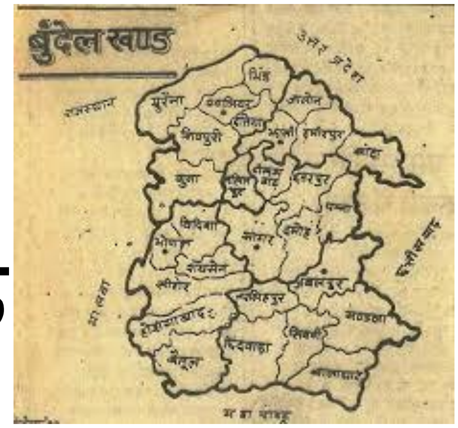
अरविन्द कुमार त्रिपाठी द्वारा पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





लोक कहानी
Folk Tales

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

लोक कहानी Folk Tales

अध्याय शीर्षक	लोक कहानी
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Folk Tales**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – लोक कहानियों का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

कहानी

बचपन में जो सबसे ज्यादा मजे प्रदान करती थी उनमें नानी की कहानी शायद सबसे ऊपर है। जब नानी के पास नहीं, तो दादा–दादी की कहानी तरह–तरह के किस्से गोई होते हैं और उनमें कल्पनाशीलता की अद्‌भुत पूर्णता होती थी, जो आज भी चकित कर देती है। कहानियों में भूत प्रेत, साधुओं और ऋषि मुनियों के चमत्कार, उनके दिए गए ज्ञान, जो कहानियों में छुपे होते थे, हंसी मजाक के मौके कहानी और कविताओं में कहावतों में तो पूछे ही नहीं। बात इन सब चीजों के पीछे एक भाव हमेशा छिपा होता था। राजकुमार, रानी, राजकुमारी, कभी–कभी एक साधारण पुरुष, कहानियों का नायक होकर प्रेम देशभक्ति समाज के लिए तरह–तरह के जोखिम उठाता और अपने मित्रों के साथ मंत्री या अपने साथियों के साथ मिलकर समाज को, अपने ग्रुप को, उठाने में अपनी चतुराई का पूरा अवसर उठाता।

इसी तरह की एक कहानी जो भाषा के साथ और सामाजिक व्यवहर्ता के साथ जुड़ी हुई है, कुछ इस प्रकार की है:–

बालक दिन में भी किस्से कहानियां सुनाने का आग्रह करता है तो उनको टालने के लिए कहा जाता है कि दिन में कहानियां नहीं सुनाई जाती और कहानी सुनाने या सुनने से उनका प्रिय मामा रास्ता भूल जाता है। बच्चों को अपने मामा से बहुत प्यार होता है अतः कहानियां नहीं सुनेंगे, वैसे बच्चों का आग्रह डालने का इससे अच्छा बहाना क्या हो सकता है। मनोरंजन के साधन के तौर पर रात में सोते समय दादी या बड़ी स्त्रियां और अगर बच्चे नानी के यहां गए हुए हैं तो नानी, सोते समय कुछ कहानियां सुनाती हैं और बच्चा उन कहानियों को सुनते सुनते, बीच में आधे कहानी होने तक सो जाता है।

कहानी का कुछ –कुछ दादी के स्थानीय शब्दों में, भाषा के अनुसार, इस प्रकार की होती है।:–

<u>कौवा व चिरइया</u>

ऐसे ऐसे एक कौवा हतों। सो बो एक पेड़ पै पौंचौ। हुना चिरैया के चेनुआ धरे ते। सो वो जाके चौंच मटकाउन लगौ। चिरइया जो देख रईती सो बोली, इते कायें खो आए। कौवा बोलौ कै हम तमाए चेनुओं खावे आए हैं। चिरइया ने खूब सोच के बांसें कई, जाओ, पैलें कुआं पै मो धो आओ, तब खइओ। कौवा बोलौ, जो कौन बड़ी बात है। वौ फिर उड़त उड़त एक कुवां नौ पौचौं और कुवां से बोलौ।

कुअल कुअल तुम कुअल जती, हम काग जती।
तुम देव पनुल्ला, धुबै मुमुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

कुआं बोला, 'तुम कुमार के से एक घड़ा ले आओ और पानी खेंच ले जाओ।'
जौं सुन के कौवा हतों से कुमार के पौंचो। वां से बोलौ–

कुमर कुमर, तुम कुमर जती, हम काग जाती।
तुम देओ धड़ल्ला, खींचैं पनुल्ला, धुबै मुमुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

कुमार बोलौ, "तुम जाके पैले मांटी खोद ले आंओ तौ हम बना दे हैं।" इतनी सुनकै कौवा माटी की खदान पै पौचो और बोलौ।–

मटुल मटुल, तुम मटुल जती हम काग जती।
तुम देऔ मटुल्ला, बने धडुल्ला।
खींचैं पनुल्ला, धुबै ममुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

माटी बोली, ''तुम हिरना कौ सींग लै आओ, खोद लै जाओ।''
जौ सुनके कौवा उड़ौ और डांग में जाकै एक हिन्ना नौं पौंचौ। हिन्ना ते कन लगौ।

हिरन जती ओ हिरन जती, हम काग जती।
तुम देऔ सिंगुल्ला, खुदें मटुल्ला।
बने धड़ुल्ला,
खींचैं पनुल्ला, धुबै ममुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

हिन्ना बौलौ, ''बा भइया कौवा, हम तैयार हैं। तुम ऐसौ करौ के पैले एक कुत्ता को लुवा लियाओ। बौ हमसे लरहै। तई हमाऔ सींग टूट जैं, सोई लै जैइयो।'' जौ सुनतई बौ उड़ौ और उड़त–उड़त एक कुत्ता नौ पौचों और बांसे बोलौ।–

कतुल, कतुल, तुम कतुल जती, हम काग जती।
तुम लड़ौ हिन्ना से, खिंचै सिगुल्ला।
खुदें मटुल्ला, बने धड़ुल्ला,
खींचैं पनुल्ला, धुबै ममुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

कुत्ता बोलौ, ''जौं करौं, तुम भैंस का दूध लै आओं। हम पीकें मोटे हो जायें, तब लड़ सकैं।'' सो जौं सुनके कौवा हतौं सौ भैंस नों पांचो और बोलो।:–

भिसुल, भिसुल, तुम भिसुल जती, हम काग जती।
तुम देऔ ददुल्ला, पिए कुतुल्ला, लड़ै हिन्ना से, खिंचै सिगुल्ला।
खुदें मटुल्ला, बने धड़ुल्ला,
खींचैं पनुल्ला, धुबै ममुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

भैंस बोली, ''तुम जाके पैले चारौ लै आओ, सो हम खायें, फिर चल हैं। इत्ती सुन के कौवा उड़त उड़त डांग में पौंचो और चारे सौं बोलौ।

चरूल, चरूल, तुम चरूल जती, हम कांग जाती।
तुम देऔ चरुल्ला, खाये भिसुल्ला,
देऔ ददुल्ला, पिए कुतुल्ला, लड़ै हिन्ना से, खिंचै सिगुल्ला।
खुदें मटुल्ला, बने धड़ुल्ला,
खींचैं पनुल्ला, धुबै ममुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

जौ सुन के चारौबोलौ, ''भइया, पनमेसुर(परमेश्वर) ने हमै तौ बनाउई जाखों हैं। एन खुशी से ले जाओ। अकेलै तोम एक हंसीआ मसिया लै आओ। जौ सो काट लें जाओं। कौआ ने पूछीं, ''हसियां कौन तो मिल जे हैं।'' चारौ बोलो, ''लुहार दादा नौ।'' इतनों सुन कै कौआ हुन

से चल दऔ और सोचव जावै, अब तौ बस चेंनुआ खावैं खौं मिल जैं हैं। हौंत करत वौ एक गांव में लोहार नै पौंच गऔ। बौ पा बेरा हंसियां पीट रओ और उनें तया रऔं तौ। कौवा बड़े राग ते कन लगौ।

लहुर–लहुर, तुम लहुर जती, हम काग जती।
तुम देओ हंसुल्ला, कटै चरुल्ला, खाए भिसुल्ला,
देऔ ददुल्ला, पिए कुतुल्ला, लड़ै हिन्ना से, खिंचै सिगुल्ला।
खुदें मटुल्ला, बने धड़ुल्ला,

खींचैं पनुल्ला, धुबै ममुल्ला।
खायें चिरइ के चेनुआं, मटकावें नोनीं चोच।

लोहार जौं सुन के बोलौ, ''हओ, भइया ले ओ, जो है कैसे ले जै हैं'' कौआ बोलौ, '' हमाये गले पै धर दो।'' हंसीआ के धरत नई बांको गरों खस्सई कट गऔ और बा कौवा के दो टूका हो गएऔर वो कौवा हतों सों मर गऔ। चिरइया हती सो अपने चैंनुअन खों लै के मजे में रन लगी।

जो कोउ की बुराई चाउत, बाको बुरो होत है।

अगर देखा जाए तो दादी, बड़ी स्त्रियां, बच्चों को जो कहानी सुनाती हैं, उस कहानी के अंत में एक मोरल या उपदेश होता है, जैसे इस कहानी में बताया गया है कि अगर कोई किसी का बुरा चाहता है तो उसी का बुरा होता है।

धम्धूसर राजा –अंधेर नगरी चौपट राजा

धम्धूसर राजा –अंधेर नगरी चौपट राजा की कहावत बहुत पुरानी है और इससे संबंधित कहानियां भी बहुत पुरानी है। इसी से संबंधित एक और वर्जन भी प्रचलित है –अंधेर नगरी में धम् धूसर राजा भी किसी चौपट राजा से कम काम का नहीं होता है। उसमें ना तो अकल होती है और ना ही शक्ल। यह शब्द अवधि से लेकर बुंदेली, मगही और मैथिली तक भी राजमान है। सभी जगह इसका एक ही अर्थ है वह है ऐसा शख्स जो भद्दा, मोटा, स्थूल बदन और अक्ल विहीन है। लेकिन इतने से अर्थ पूरा नहीं होता बेवकूफी की बातों पर वह बार–बार लड़ता है और अपनी ही बात मनवाने के लिए उत्सुक रहता है। कुछ लोग धम्धूसर राजा को चौपट राजा के साथ साथ कुछ राजनेताओं से भी जोड़ते हैं। धम्धूसर राजा कोई आज का शब्द नहीं है, पुस्तकों के अनुसार यह लगभग 400 साल पुराना तो है ही। तुलसीदास ने कवितावली में लिखा है

गुन ज्ञान, गुमान भभेरी बड़ी, कलपद्रुम काटत मूसर को।
कलिकाल विचार अचार हरो, नहीं सूझे कछु धम्धूसर को।

धम्धूसर राजा को ज्ञान, राजसत्ता, राजमद के अहंकार में उसके विचार इस तरह से नष्ट हो चुके हैं कि कलयुग में कौन बड़ा है या कौन छोटा, धम्धूसर यानी बेवकूफों को कुछ नजर नहीं दिखाई देता नजर नहीं आता। जाहिर है धम्धूसरों से तुलसीदास भी बहुत परेशान रहा करते थे। अंग्रेजी में इस शब्द का अर्थ फ्लैबी /फ्लैसिड मिलता है। दिक्कत यह है कि इसमें धम्धूसर की वह अकल और अहंकार नहीं दिखाई देता जो सदियों पहले तुलसीदास ने देख लिया था और चौपाई के रूप में लिख भी दिया था

पंडित, नौकर और भाषा

एक पंडित जी थे जो अपने नौकर को हमेशा इस बात के लिए कहते रहते थे कि वह उनके जैसा क्यों नहीं है जबकि वह उनके पास ही रहता है। उसे संस्कृत बोलना ही चाहिए। नौकर तो नौकर ही ठहरा, चुपचाप उनके उलाहना सह लेता, लेकिन कभी संस्कृत में बोलने की कोशिश नहीं करता। पंडित जी के पास आने जाने वालों से सहज देसी जुबान में, जो उसके गांव और आसपास की भाषा होती है, में ही बात करता। पंडित जी इस बात से चिढ़ते। लेकिन नौकर पर उस बात का कोई असर नहीं होता।

एक दिन पंडित जी नौकर के साथ किसी अन्य गांव में कार्यवश जा रहे थे। रास्ते में उन्हें प्यास लगी, तो एक कुएं पर ठहर गए। वहां रखी बाल्टी से पानी भरकर नौकर उन्हें पिलाने लगा। पंडित जी का पर फैसला और वह कुएं में गिर गए। पानी में डूबते उतराते, पंडित जी ने चिल्ला कर कहा– मुंह क्या देखते हो, लोगों को बुलाओ, मदद करेंगे। अब नौकर जो आम तौर पर देसी जुबान में ही अपनी बात कहता था, इस गंभीर संकट के वक्त उसने संस्कृत बोलना शुरू कर दिया। जाहिर है वह उनसे अपने अपमान का बदला लेना चाह रहा होगा। वह इधर–उधर भागते हुए चीखकर कह रहा था।

यो उपस्य में गिरला कूपस्य में, करैत छैथ बापस्य यौ बापस्य या।
वह ऊपर से कुएं में गिर गए हैं और बाप रे बाप रे चिल्ला रहे है।

नीचे मौत से संघर्ष करते ब्राह्मण महोदय ने सोचा कि मैंने किस घड़ी में इसे सन्स्कृत बोलने को कहा और चिल्ला कर बोले– भाई अपनी जुबान में ही बोल ताकि लोग बात समझ सके।

देखा जाए तो कहानी ब्राह्मण के ऊपर एक कटाक्ष है जिसे ज्ञान तो है लेकिन उसे सामाजिक व्यवहारिक कुशलता का ज्ञान नहीं है। उसे यह पता होना चाहिए कि सामान्य बोलचाल की भाषा क्या है और तर्क वितर्क की भाषा क्या है। साथ ही यह भी प्रदर्शित करता है कि मूर्ख लोगों को ज्यादा कुछ समझाने का फायदा नहीं होता है। नौकर में भी व्यवहारिकता की कमी है अन्यथा इस तरह आकस्मिक अवसर पर इस तरह की संस्कृत में बातें ना करता, जबकि उसे पता है कि लोगों से स्थानीय भाषा में ही बातें करनी चाहिए।